वर्ष : २१ अङ्क : ६ सितम्बर १९९७ ई०

जैन भवन

तित्थयर

1210

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of Rice Brain, D.O.B Mustard D.O.C, Neem deoiled Powder, ground nut Deoiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P)
Ph : 42017/397/073
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790

Registered Office
143, Cotton Street
Cal - 700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, Indian Exchange Place
Calcutta - 700 007
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SO IN IN
Fax : 2200248

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्र
वर्ष २१ : अंक ६
सितम्बर १९९७

☐

संपादन
राजकुमारी बेगानी
लता बोथरा

☐

आजीवन : एक हजार रुपये
वार्षिक शुल्क : पचपन रुपये
प्रस्तुत अंक : पांच रुपये

☐

प्रकाशक
जैन भवन
पी-२५, कलाकार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७००००७
दूरभाष : २३८२६५५

☐

मुद्रक
अनुप्रिया प्रिन्टर्स
६ ए, बड़ौदा ठाकुर लेन,
कलकत्ता-७

सूची

सम्पादकीय	१५५
क्षमा-वाणी	१५६
शौरीपुर का राजकुमार	१५७
श्रावक जीवन	१६५
राजा सम्प्रति	१७१
संकलन	१७६

OUR CUSTOMERS ARE OUR MASTERS

You can safely choose Oodlabari Tea for finest CTC teas, flavoury leaf teas and health giving Green Teas at reasonable prices. You can also phone at our Office to any assistance in selection of teas.

Insist on purchasing following packets

Anyone desirous of taking dealership for our teas may kindly contact at following address :

THE OODLABARI COMPANY LIMITED
NILHAT HOUSE, 6TH FLOOR
11 R. N. MUKHERJEE ROAD, CALCUTTA 700 001

Calcutta office Phone : 248-1101, 248-9594, 248-9514

सम्पादकीय

"खामेमि सव्वे जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ॥"

मैं समस्त जीवों को क्षमा करता हूँ और सब जीव मुझे क्षमा करें। सभी जीवों के प्रति मेरा मैत्री भाव है, मैं किसी का विरोधी नहीं।

मानवीय आचरण में क्षमा का पक्ष सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि किसी भी अशान्त जीव को शान्त करने के लिये क्षमा से बढ़कर कोई अस्त्र नहीं होता। क्षमा का अर्थ है कष्ट पहुँचाने वाले के प्रति मन में किसी भी प्रकार का विकार न आना। मन में क्षमा की भावना रहने से व्यक्ति शान्त व संतोषी बनता है तथा उसे आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है। क्षमा की भावना से ही सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है और जिसके द्वारा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। क्षमा जैन धर्म का महत्वपूर्ण अंग है। पर्युषण पर्व की आराधना और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य क्षमा की भावना है जिसमें क्षमा माँगना और क्षमा देना दोनों निहित रहते हैं। क्षमा माँगना तो श्रेष्ठ है ही पर क्षमा करना उससे भी श्रेष्ठतर भावना है जो व्यक्ति को और भी शीर्ष स्थान पर ले जाती है।

"सव्वस्स जीव रासिस्स, भावओ धम्मनिहि अनिअचित्तो।
सव्वे खमावइता, खमामि सव्वस्स अहयं पि॥"

(आवश्यक सूत्र)

अर्थात् धर्म प्रवृति में अन्तःकरण पूर्वक स्थिर हुआ मैं अपने से हुए समस्त अपराधों के लिए सब जीवों से क्षमा माँगता हूँ और सब जीवों द्वारा मेरे प्रति किये गए अपराधों को क्षमा करता हूँ।

भगवान् महावीर क्षमा तथा करुणा की मूर्ति थे। ग्वाले के द्वारा कानों में कीलें ठोके जाने पर हुई अत्यन्त तीव्र पीड़ा को सहन कर उन्होंने क्षमा का अनुपम उदाहरण जनमानस के सामने रखा था। उन्होंने क्षमा का महत्व बताकर गणधर गौतम को आनन्दश्रावक से क्षमा याचना करने के लिए भेजा। भगवान् महावीर के परम भक्त उदयन राजा ने प्रतिक्रमण कर क्षमा की भावना से ओतप्रोत होकर बन्दी चण्डप्रद्योत राजा को मुक्त कर 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' को चरितार्थ किया। क्षमा व्यक्ति के हृदय को उदार सहनशील तथा सहिष्णु बनाती है। क्षमा द्वारा ही प्रेम, करुणा और अहिंसा का उद्भव होता है, तथा काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि समस्त कषायों से निवृति होती है। सही अर्थ में क्षमा से ही परमात्व की प्राप्ति होती है।

महात्मा कबीर के शब्दों में—

"जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप॥"

—लता बोथरा

क्षमा-वाणी

जइ किंचि पमाएणं, न सुट्ठु मे वट्टियं मए पुव्वि ।
तं मे खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाओ अ ॥

अल्पतम प्रमाद के वश भी यदि मैंने आपके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया हो तो मैं निःशल्य और कषाय रहित होकर आपसे क्षमा याचना करता हूँ ।

सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वे खमावइत्ता खमामि, सव्वस्स अहियं पि ॥

हे भगवन् ! मैं अञ्जलि सहित नतमस्तक होकर श्रमणसंघ से क्षमाता हूँ, वे मेरे अपराधों को क्षमा करें ।

आयरिए उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे य ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥

आचार्य, उपाध्याय, शिष्यगण और साधर्मी बन्धुओं तथा कुल और गणों आदि सभी के प्रति जो क्रोधादि कषाय युक्त व्यवहार किया हो, उसके लिए मन, वचन और काया से क्षमा माँगता हूँ ।

खमियव्वं खमावियव्वं, जो उवसमई अत्थि तस्स आराहणा ।

क्षमा माँगनी चाहिए, क्षमा देनी चाहिए । जो क्षमा याचना करके कषायों का उपशमन कर लेता है, वही आराधक है ।

क्षमा धर्म, क्षमा यज्ञ, क्षमा वेद, क्षमा श्रुतम् ।
य एतदेवं जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति ॥

क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है, और क्षमा शास्त्र है । जो इस तरह जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है ।

●

शौरीपुर का राजकुमार

पूर्णचन्द जैन

पूर्वानुवृत्ति

संवाद

फागों की इस बेला में थी
ब्रज की यादें फिर जाग उठीं
द्वारा में जो कुछ खोया था
उसकी पीड़ा फिर साल उठी ॥

संदेश मिला अन्तःपुर से
अब फाग खेलने आना था
महलों के सुन्दर प्रांगण में
रंगों का साज सजाना था ॥

नेमिश्वर वहाँ घिरे खड़े थे
जहाँ रूप राशि का व्यूह रचा
प्रथम द्वार तो खुला हुआ था
अन्त कहीं नहीं दिखता था ॥

रत्नों की राशि छिटक रही
बिजली सी थी वह कौंध रही
लगता था उर्वशी अरु रंभा भी
क्या मृत्यु लोक में डोल रहीं ॥

था यही प्रयास भामियों का
नेमिश्वर को वे समझावें
नारी बिन रहा अधूरा नर
कैसे उनको ये बतलावें ॥

मात—पिता अरु गुरुजन की
यह घोर अवज्ञा क्यों कीनी
मर्यादा में तुम बंधे हुए
पीर उन्हें ये क्यों दीनी ॥

नारी तो नर की पूरक है
उससे ही तो संसार रचा
नर को संभाला आँचल में
तबही उसका साज सजा ॥

नर ने जब ही इतिहास रचे
नारी ने उसमें योग दिया
करके अनुप्राणित मानव को
हर पथ पर उसको मोड़ दिया ॥

नारीय शक्ति का मान करो
उसको तुम यूँ ना ठुकराओ
उस शक्तिदायिनी नारी को
समझो और फिर अपनाओ ॥

याद नहीं एक नारी ने ही
उस स्वर्ण-लंक को भस्म किया
निर्वासित आर्य पुरुषों ने भी
उसके कारण ही द्वन्द्व किया ॥

उन खुले केश की ज्वाला में
युगवीर सभी थे भस्म हुए ॥
मृत्यु को जीत सके वे
नारी के आगे अस्त हुए ॥

कुरुक्षेत्र की वह ज्वाला
माधव ने स्वयं जलायी थी
वे स्वयं नहीं उसके कर्त्ता
पाँचाली आगे आयी थी ॥

थे वसुदेव भी पराभूत
प्रतिशोध मांगती नारी से
उस युग का था अन्त हुआ
भारत की ही इस नारी से।।

स्वर्गलोक में भी नारी ने
एक अक्षुण्ण कीर्ति बनायी है
चक्रेश्वरी और अम्बा भी
हर युग में ही तो आयीं हैं।।

इसी धरा ने तुमको नेमि
अपना सब ही तो दान किया
शौर्य रूप जीवन दे कर के
तुमको है ये सम्मान दिया।।

अपना अंश इसे कुछ दे दो
यह धरा यही है मांग रही
नारी का सन्सर्ग करो तुम
वह अंशदान है चाह रही।।

राजकुंवर तुमने क्या जाना
कैसा है यह अन्याय किया
अगणित महलों में तुमने तो
मुग्धाओं को सन्यास दिया।

तेरे रूप शौर्य की चर्चा
उनको गहन उत्कंठा देती हैं
द्वारा का सन्देश जोहती
नित अपेक्षाओं में वे रहती हैं।।

आता का यह वैभव देखो
यह रूप राशि जिनकी दासी
इन्द्रलोक भी शरमाता है जिससे
क्या तुमको ये नहीं लुभाती

तुमको वीर व्रती कहते हैं
तुम त्यागी भी कहलाते हो
जिस वस्तु का रस नहीं जाना
उसका क्या त्याग दिखाते हो॥

अविचल, निर्विकार, बैरागी
थे नेमिकुंवर कुछ सोच रहे
माया के अनगिनत रूपों को
वह ज्ञान सुधा से तोल रहे॥

माया तेरे रूप अनेकों
नित प्लावित मानस करते हैं
पुद्गल में रस संजो-संजो कर
मानव को दानव करते हैं॥

चेतन तो आच्छादित होता
माया के उन बिष बाणों से
जनम जनम से भटक रहा है
उसके ही क्रूर प्रहारों से॥

नारी तो सचमुच वंदनीय
उसने नर को है जन्म दिया
प्रेयसी वह बन गयी जब ही
नर के संयम को भंग किया॥

भाभी ने सबको समझाया
ये बने शुष्क माटी के हैं
नारी को ये संभाल सकें
पुरुषार्थ नहीं वह इनमें है ।।

कर्मों का प्रबल वेग उठा
झकझोर दिया तीर्थंकर को
इनके मुख पर मुस्कान उठी
सुख मिला तभी भाभियों को ।।

महलों की उन प्राचीरों से
संगीत उठा था नारी का
नेमि को उसने जीत लिया
स्वर गूंज रहा था भाभी का ।।

सन्देश मिला फिर माधव को
सत्यभामा ने भिजवाया था
अविलम्ब दूत को भेज कृष्ण ने
जूनागढ़ में पठाया था

—: ० :—

निमन्त्रण

उग्रसेन ने हर्षित होकर
सन्देशा था यह प्राप्त किया
नेमिश्वर और राजमती का
परिणय होना स्वीकार किया ।।

सौंदर्य स्वामिनी राजमती
सागर तट पर रहती थी
सागर तट पर वह बड़ी हुई
द्वारा की लहरें गिनती थीं ।।

जाति स्मरण था ज्ञान उसे
देखे उसने नव - भव सारे
हरभव में नेमी मिले उसे
फिर हुये स्वप्न धूमिल सारे ।।

नव - भव की वह विरह वेदना
देती उसको थी तीक्ष्ण व्यथा
मर्यादाओं से बँधी हुई
नहीं कह पाती अपनी व्यथा ।।

वह बाट जोहती रहती थी
कब प्रभु उसको अपनायेंगे
यह मिलन विरह की गुत्थी को
किस विधि वे सुलझायेंगे ।।

सन्देश सुना जब ही उसने
फिर पुलकित हो वह काँप उठी
मधुमास जगा था अन्तर से
मिलने को आतुर हो उठी ।।

उस रूप यामिनी राजुल ने
सागर की ओर तभी देखा
द्वारा की चंचल लहरों को
जूनागढ़ को छूते देखा ।। ●

बारात

भृगु को छूकर जब चंदा ने
शुभ बेला तुरन्त बुला ली थी
महलों के तोरण द्वारों पर
शादी की धूम मचा दी थी।।

धवल अश्व के ऊपर नेमी
थे दुल्हा बन के चढ़े हुए
माँ ने फिर विदा उन्हें दीनी।
थाली में दीपक लिये हुए।।

बारात चली तब ही भारी
युग-युग से ऐसा नहीं हुआ
उस युग के वीर सभी आये
मानो युग ही आ खड़ा हुआ।।

यादव कुल के थे वे अग्रज
बलराम सामने रथ में थे
लिए हाथों में विजयी गदा
आगे बढ़ने को तत्पर थे।।

पिता समुद्र विजय थे वहाँ पर
वसुदेव आदि सब रथ में
थे वीर सुभट दायें-बायें
अश्वों की चार पंक्तियों में।।

चन्दा की तरल चांदनी में
था चक्र सुदर्शन चमक रहा
माधव के पीत-पिताम्बर पर
रवि की किरणों सा झलक रहा।।

थे खड़े वहाँ महा धनन्जय
गाण्डीव हाथ में दीप्त था
हनुमान पताका रथ पर थी
लगता मानो अभियान बड़ा ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी
कौतुहल वश ये देख रहे
देव, असुर, किन्नर, दानव सब
यह देख सभी थे झूम रहे ।।

कैलाश शिखर पर महादेव
थे देख रहे यह सब मेला
गौरी को समझा कर बोले
यह कर्म भेद का है खेला ।।

अवधि ज्ञान से देख इन्द्र को
मन में कौतुहल जाग रहा
यह कैसा ब्याह रचाया है
यह प्रश्न उन्हें था साल रहा ।।

आकर वासुदेव के पास
विस्मय हो प्रश्न उठाया यह
यह लीला रची आपने क्यों
क्योंकर है ब्याह रचाया यह ।।

कर्मों का प्रतिरोध कर सकें
यह शक्ति नहीं हम सब में है
नियति नटी का खेल यही है
हम तो केवल दर्शक भर हैं ।।

क्रमशः

श्रावक जीवन (११)

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी महाराज

पूर्वानुवृत्ति

परन्तु दया से प्रेरित होकर अथवा अपने व्यवसाय [डॉक्टरी] से जीवों का ऑपरेशन करें, तो वह व्रत का अतिचार नहीं बनता है। परन्तु दया का काम बनता है। पुण्यबंध का कार्य होता है।

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के कानों में, जब वे ध्यानस्थ खड़े थे, ग्वाले ने लकड़ी के नुकीले कील गाड़ दिये थे···क्रोध में पागल बन कर। ग्वाले ने पापकर्म बांधा था। परन्तु जब वैद्य ने भगवान् के कानों में से वे कील निकाले थे, तब भगवान् को इतनी घोर पीड़ा हुई थी कि भगवान् के मुँह से तीव्र चीख निकल गयी थी···और उस चीख से पहाड़ में दरार पड़ गई थी। इतनी पीड़ा होने पर भी, कील निकालनेवाले वैद्य को पुण्यकर्म का बंध हुआ था! चूंकि वैद्य की भावना भगवान् को पीड़ा पहुंचाने की नहीं थी, पीड़ा मिटाने की थी।

४. नौकरों से ज्यादा काम नहीं करवाएं :

किसी जीव को जानबूझ कर पीड़ा देना नहीं है! 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना को आत्मसात् करनेवाला समकितदृष्टि जीव ऐसा व्यवसाय भी नहीं करेगा कि जिस में मनुष्य को और पशुओं को ज्यादा त्रास देना पड़ता हो। नौकर से भी वह ज्यादा काम नहीं करवायेगा।

जैसे कि आप स्टेशन पर ट्रेन से उतरे। आप के पास सामान ज्यादा है। आप को एक कुली [सामान उठानेवाला रेलवे का नौकर] के सर पर ही सारा सामान नहीं चढ़ाना चाहिये। वह जितना उठा सके उतना ही सामान देना चाहिये।

स्टेशन से बाहर आये। आप को ऑटोरिक्शा नहीं मिली, मनुष्य-रिक्शा मिली। मनुष्य-पुरुष चलाता है रिक्शा। रिक्शा चलानेवाले को त्रास न हो उतने ही लोगों को उस में बैठना चाहिये और उतना ही सामान रखना चाहिये। रास्ते में चढ़ाव-उतार आये तब रिक्शा में से उतर जाना चाहिये। यानी रिक्शा चलानेवाला एक जीव है, यह समझ कर उसके साथ दयापूर्ण व्यवहार करना चाहिये।

मनुष्य स्वयं जितना भार उठा सके और स्वयं उतार सके, उतना ही भार उस से उठवाना चाहिये। पशु के ऊपर भी उतना भार नहीं रखना चाहिये कि जिससे उस को त्रास हो। घोड़ागाड़ी, बैलगाड़ी, ऊंटगाड़ीं·· कुत्तागाड़ी··· में पशुओं को जोड़ें हों, तो योग्य समय पर उनको मुक्त कर देने चाहिये। हृद से ज्यादा दौड़ाना नहीं चाहिये, मार-मार कर भगाने नहीं चाहिये।

याद रखना चाहिए कि आप समकितदृष्टि श्रावक हैं आप में अनुकम्पा होनी ही चाहिये। दया···करुणा···अनुकम्पा आपका लक्षण है। आप दया हीन कृत्य कर ही नहीं सकते। आप दूसरे जीवों को कष्ट दे ही नहीं सकते हैं।

५. पशुओं को और नौकरों को समय पर पानी और भोजन दो :

पशु हो या मनुष्य हो, उसको भूखे या प्यासे नहीं रखना चाहिये। कभी गाय या भैंस ने दूध नहीं दोहने दिया, लात मार दी, बरतन तोड़ दिया···तब गुस्से में आकर—"आज तुझे पानी ही नहीं पिलाऊंगी···आज तुझे घास ही नहीं दूंगी ··!" यूं बोल कर दिन भर उस पशु को भूखे-प्यासे रखते हैं! ऐसा नहीं करना चाहिये। पशु के अपराध को भी क्षमा करना है। जो दूध देता है वह कभी लात भी मारता है! खानी पड़ती है लात! परन्तु सामने लात मारने जाओगे तो दूध नहीं मिलेगा!

वैसे नौकरों को भी जान बूझकर भूखे-प्यासे नहीं रखने चाहिये। जबरन् उपवास नहीं करना चाहिये! कभी भूख से मृत्यु भी हो सकती है। हाँ, अजीर्ण हो गया हो तो उपवास करा सकते हैं। ज्वर आया हो तो उपवास करा सकते हैं।

कभी कोई अपराध कर दे नौकर, तो उसको भय बता सकते हैं—"आज तुझे भोजन नहीं दिया जायेगा, पानी भी नहीं दिया जायेगा, एक कमरे में बंद कर दूंगा ··!" परन्तु वैसा करने का नहीं! भोजन का समय समाप्त होने के बाद उसको, फिर ऐसी भूल नहीं करना बोल कर भोजन दे देना चाहिये। कभी सापेक्ष भाव से "आज भोजन नहीं दूंगा तभी यह गल्ती कबूल करेगा," सोचकर दिन भर भूखा रखने से भी अतिचार नहीं होता।

हृदय की भावना शुभ होनी चाहिये। जीवों के प्रति स्नेहभाव होना चाहिए। यह होने पर, बाहर से—व्यवहार से, बांधने करने पर, मारने पर, ज्यादा भार भरने पर और भूखा रखने पर भी 'अतिचार' नहीं लगता है। यानी *पहला अणुव्रत दूषित हो बनता है।*

प्रश्न : पहला अणुव्रत 'स्थूलप्राणातिपात-विरमण' है। यह व्रत जिसने लिया है, वह जीवों का बंधन आदि करता है, तो भी व्रत तो अखंड ही रहता है न?

उत्तर : सही बात है ! प्राणातिपात का त्याग किया है पहले व्रत में, बंधन-मारण आदि का त्याग-पच्चक्खाण नहीं किया है, परन्तु जीवों का बंधन वगैरह प्राणातिपात के उपाय हैं ! इसलिये उपायों का अणुव्रत में समाविष्ट हो जाता है। यानी प्राणातिपात का पच्चक्खाण लिया तो वध-बंधनादि का पच्चक्खाण हो ही जाता है !

प्रश्न : तब तो, वध आदि करने पर पच्चक्खाण का भंग होता है न ? अतिचार नहीं कह सकते !

अतिचार की परिभाषा :

उत्तर : प्रत्येक व्रत के दो पहलू होते हैं-अन्तर्वृत्ति और बहिर्वृत्ति। यानी व्रत भावात्मक और क्रियात्मक होता है। एक उदाहरण से समझाता हूं—

एक अणुव्रतधारी मनुष्य, रोष में आ गया और सोचने लगा—"इसको मार डालूंगा, प्राण ले लूंगा...।' और इस भावना से उसने उस व्यक्ति पर प्रहार किया दयाहीन बन कर। परन्तु वह व्यक्ति भाग गया, प्रहार नहीं हुआ उस पर, वह बच गया।

इस घटना में अणुव्रतधारी के पहले व्रत का अन्तर्वृत्ति से भंग हुआ परन्तु बहिर्वृत्ति से भंग नहीं हुआ। उस व्यक्ति की मौत नहीं हुई। बहिर्वृत्ति से व्रत अभंग रहा। इसलिये उसके व्रत का भंग नहीं हुआ, अतिचार लगा ! चूंकि देश से [आंशिक रूप में] व्रत का भंग होना ही 'अतिचार' कहलाता है। व्रत के एक अंश का पालन होता है और एक अंश का भंग होता है, तब तक 'अतिचार' कहलायेगा। दोनों अंशों का भंग होने पर व्रतभंग कहलायेगा !

मन-वचन-काया से हिंसा का त्याग करें :

वास्तविकता यह है कि हमें मन-वचन-काया से हिंसा का त्याग करना चाहिये। जीवहिंसा अनेक अनर्थ पैदा करती है। अलबत्ता, सम्पूर्ण अहिंसा का पालन तो साधुपुरुष ही कर सकते हैं। त्रस और स्थावर-सभी जीवों की मन-वचन-काया से हिंसा नहीं करना, नहीं करवाना और अनुमोदन नहीं करना, इस प्रकार हिंसा का त्याग साधुपुरुषों को होता है।

गृहस्थधर्म में तो मात्र निरपराधी त्रस जीवों की संकल्पपूर्वक हिंसा का त्याग होता है। आपलोग गृहस्थ हैं, पृथ्वी-पानी-अग्नि-वायु और वनस्पति के जीवों की हिंसा आपके जीवन में होती ही है। त्रस जीवों की [द्विन्द्रीय से पंचेन्द्रिय तक के जीव] हिंसा भी थोड़ी-बहुत होती है। इसलिये आपका अणुव्रत इतना ही है कि आप निरपराधी त्रस जीवों की हिंसा नहीं करेंगे। वह भी संकल्प पूर्वक-इरादातन हिंसा नहीं करेंगे।

स्थावर जीवों के प्रति भी करुणा चाहिये :

सम्यग्दर्शन के प्रकाश में आप पृथ्वी-पानी-अग्नि-वायु और वनस्पति में जीवत्व को मानते हैं। भले वे स्थावर जीव हैं, सूक्ष्म जीव हैं, परन्तु जीव तो हैं ही। भले, उनकी हिंसा नहीं करने का व्रत नहीं है आपको, फिर भी निर्दयता से उपेक्षाभाव से उन जीवों की भी हिंसा नहीं करनी चाहिये। उनकी उपेक्षा जीवत्व की उपेक्षा है। हिंसा करनी ही पड़ती हो तो सापेक्षभाव से कम से कम प्रमाण में करनी चाहिये।

—पानी का उपयोग बहुत कम करना चाहिये। परन्तु जब से आपके घरों में पानी के नल आ गये, पानी का बहुत दुरुपयोग होने लगा है। जहां एक लोटा पानी से काम हो सकता है, वहां पचास लोटे पानी का दुर्व्यय हो रहा है। इनका परिणाम आज देखते हो न ? देश के अनेक प्रान्तों में—राज्यों में पानी का अभाव हो गया है। पीने के लिये पानी की समस्या पैदा हो गई है !

—पानी-अपकाय स्थावरजीव है, परन्तु उसमें त्रस जीव गिरते हैं। अत: पानी को छानकर पीना चाहिये। उपयोग में लेना चाहिये। इससे त्रसकाय जीव बच जाते हैं।

—अग्नि का उपयोग भी कम से कम करना चाहिये। लकड़ी की अग्नि हो या कोयले की गैस की हो या केरोसीन की···अग्नि कोई भी हो, उपयोग कम करना चाहिये। "अग्नि में जीवत्व है", यह बात याद रखो।

—वायुकाय के प्रति भी करुणाभाव होना आवश्यक है। कई लोग २४ घंटा 'फेन'—पंखा चालू रखते हैं। असंख्य जीवों की हिंसा होती है पंखा चलने से। असह्य गर्मी के अलावा पंखे का उपयोग नहीं करना चाहिये।

—वनस्पति का उपयोग तो बहुत ही बढ़ गया है। जबकि पाँचों स्थावर जीवों में ज्यादा संवेदनशील होते हैं वनस्पति के जीव। रोजाना कितनी सब्जी चाहिये ! दोपहर के भोजन में दो-तीन सब्जी चाहिये एक-दो फल भी चाहिये ! शाम के भोजन में दो तीन सब्जी चाहिये ! और रात में भी पाव-भाजी चाहिये !

याद ही नहीं रहता है कि 'वनस्पति में जीवत्व है। श्रीमंत लोग अपने बगीचे में लॉन उगाते हैं। 'लॉन में असंख्य जीव होते हैं'···यह जानते हो। फिर लॉन पर चलना, खेलना, दौड़ना···लॉन को कभी कभी काटना···यह सब चलता है न ? क्यों ? आवश्यक है लॉन उगाना ? व्यर्थ जीवहिंसा क्यों करते हो ? बेचारे स्थावरजीव अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं इसलिये उनकी हिंसा करने की क्या ? याद रखना, आप भी असुरक्षित बन जाओगे और महाकाल भक्ष्य बना देगा।

घोर हिंसक व्यवसाय नहीं करने चाहिये :

पैसे के लोभ में फंस कर आज आप लोग भी ऐसे उद्योग लगा रहे हैं कि जिन उद्योगों में त्रस-स्थावर जीवों की घोर हिंसा होती है। कई प्रकार के कारखाने चला रहे हैं। आपलोग। यदि आपको प्रथम अणुव्रत का पालन करना है तो आपको ऐसे उद्योग नहीं करने चाहिये। यदि है, तो छोड़ देना चाहिये। व्रत पालन रूप धर्मधन कमाना है तो भौतिक संपत्ति का मोह छोड़ना ही पड़ेगा।

प्रश्न : कारखाने में हिंसा होती है, परन्तु हमलोग तो हिंसा नहीं करते।

महाराजश्री : आप स्वयं नहीं करते होंगे, करवाते तो हो ? एक व्यक्ति स्वयं किसी का 'मर्डर'-हत्या नहीं करता है, दूसरे से करवाता है, तो वह निर्दोष माना जाता है क्या ? हिंसा करनेवाला जैसे अपराधी है वैसे हिंसा करानेवाला भी अपराधी है। व्रतधारी को हिंसा करवाने के भी पच्चक्खाण होते हैं। इसलिये ऐसे उद्योग नहीं चलाने चाहिए।

निरपराधी हिंसा मत करें

आपका पहला अणुव्रत है निरपराधी त्रस जीवों की हिंसा करने का। जिसने आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है, किसी प्रकार का अपराध नहीं किया है, उसको नहीं मारना चाहिये।

अपराध दो प्रकार के देखने चाहिये। एक अपराध अपने प्रति हो, दूसरा अपराध दूसरे के प्रति हो। आपको किसी ने पत्थर मारा, आपकी सहनशक्ति है, आप समता रख सकते हैं, तो आप उस अपराधी को सजा नहीं करेंगे, परन्तु आप में समता नहीं है और स्वरक्षा की भावना से आप उस अपराधी को मारते हैं तो आपके व्रत को दोष नहीं लगता है।

एक दुष्ट व्यक्ति आप को कुछ नहीं करता है, परन्तु आप के देखते हुए कोई महिला को परेशान कर रहा है, आपके समझाने पर भी वह नहीं, समझता है, तो आप उसके अपराध की सजा दे सकते हैं, आप का अणुव्रत अखण्ड रहता है।

वैसे कोई वलवान् व्यक्ति किसी निर्दोष—निर्बल मनुष्य को दुःख देता है; वह आपकी सहायता मांगता है, आप उसको बचाने के लिये उस बलवान् को सजा करते हैं, बांधते हैं, मारते हैं....तो भी आपका अणुव्रत अकलंक रहता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि आप अपराधी को सजा करते हैं तो आपके पहले अणुव्रत को दाग नहीं लगता है।

संकल्पपूर्वक हिंसा नहीं करे :

वैसे यदि आपका किसी जीव को मारने का संकल्प नहीं है परन्तु प्रमादवश कोई जीव की हिंसा हो जाय, तो आपका अणुव्रत खंडित नहीं होता है।

"मैं इसको मारु ..." ऐसे निर्दय भाव से यदि मारते हो और वह जीव मर जाता है तो आपका अणुव्रत खंडित हो गया समझें। इसलिये मन में "मारुंगा"....ऐसा विचार भी नहीं करना हैं। किसी को मारने का विचार भी आ जाय तो तुरन्त प्रायश्चित ले लेना चाहिये।

उपसंहार :

—तीर्थंकर भगवंतों ने हिंसा के कटु परिणाम बताते हुए कहा है कि हिंसा से जीव को दुर्भाग्य, अपंग शरीर, रोग.. दुर्गति प्राप्त होती है। यह जानकर कौन बुद्धिमान् पुरुष हिंसा करेगा ?

—महान् सुख-..संपत्ति यदि चाहते हो तो बिना प्रयोजन स्थावर जीवों की भी हिंसा नहीं करना।

—याद रखें-एक चींटी से लगाकर देवराज इन्द्र तक सभी जीव जीवन चाहते हैं, जीवनदान प्राप्त होने से जीवों को जो प्रसन्नता प्राप्त होती है, वह बड़ा राज्य मिलने से भी नहीं होती।

—'आचारांग सूत्र' में श्री सुधर्मास्वामी जंबुस्वामी को कहते हैं—

'हे जंबू, मैं तुझे कहता हूं कि जो अरिहंत भगवान अतीत काल में हो गये जो वर्तमान में विचरते हैं और जो भविष्काल में उत्पन्न होंगे वे सभी इस प्रकार कहते हैं, प्ररुपणा करते हैं, प्रतिपादन करते हैं, उपदेश देते हैं कि सभी प्राणी, सभी भूत, सभी, जीव, सभी सत्त्व, हननयोग्य नहीं हैं, संघट्टन करने योग्य नहीं हैं, उपद्रव करने योग्य नहीं हैं। यह धर्म ही ध्रुव—नियत और शाश्वत् है। इस प्रकार, लोका-लोकदर्शी सर्वज्ञ कहते हैं।'

—पुराण, स्मृति, वेद वगैरह अन्यान्य शास्त्रों में भी स्पष्ट रूप से अहिंसा की प्रधानता बतायी गई है।

दीर्घ आयुष्य, स्थिरता, निरोगिता, सौभाग्य, मधुर वाणी और प्रशंसा वगैरह, अहिंसा-दया धर्म के ही फल हैं। इसीलिये प्रथम अणुव्रत ग्रहण कर, उसका समुचित पालन करते हुए दयाधर्म को हृदय में स्थापित करना चाहिये। आप सभी के हृदय में दयाधर्म की शाश्वत् स्थापना हो, दयाधर्म प्रतिष्ठित हो....और आप पूर्ण सुख...सौभाग्य प्राप्त करनेवाले बनें—यही मंगल कामना है।

क्रमशः

राजा-सम्प्रति
आठवाँ परिच्छेद
पूर्वानुवृत्ति

देवयोग से उसी समय उसने अपने बालकों को खिलाने के लिए थाली में गर्मा-गर्म खिचड़ी परोसी थी। उस गर्म खिचड़ी में एक बालक ने हाथ डाल दिया और हाथ के जलने से वह चिल्ला उठा। इससे क्रुद्ध होकर वह कहने लगी :—"रे मूर्ख! तू भी क्या चाणक्य के समान बुद्धि-हीन हो गया है?"

चाणक्य इन शब्दों को सुनते ही चौंका और उसने उस वृद्धा के पास आकर पूछा :—"माताजी! आपने जिस चाणक्य की उपमा दी, वह चाणक्य कौन है?"

"वही चाणक्य जो कि चन्द्रगुप्त को साथ लेकर पाटलीपुत्र को जीतने गया था! किन्तु नन्दराजा पर विजय पाने के बदले वह खुद ही हारकर भाग गया। यों कहकर वृद्धा हँसी।

"माँजी! हार-जीत की बात तो भाग्य पर रहती है; इसमें हँसने का क्या कारण है?" वृद्धा ने कहा :—"मुझे उसकी मूर्खतापर हँसी आती है।"

"उसकी मूर्खता पर?"

उसने ऐसा कौन सा मूर्खतापूर्ण कार्य किया है, जिससे आपको उस पर हँसी आ रही है? चाणक्य ने उत्सुकता से पूछा।

"उस चाणक्य ने एकदम पाटली पुत्र को घेर लिया! यही उसकी मूर्खता थी।"

तो फिर उसे क्या करना चाहिये था, माताजी?" वृद्धा की बातों में चाणक्य की रुचि बढ़ चली। उसे प्रतीत हुआ कि, अवश्य ही वृद्धा से कोई नयी युक्ति ज्ञात होगी।"

"उस मूर्ख ने ये नहीं सोचा कि पहले अगल-बगल के प्रदेश पर अधिकार कर लेने के बाद राजधानी पर यदि चढ़ाई की जाय तो अल्प समय में सफलता प्राप्त हो सकती है। उसी प्रकार इस छोकरे ने भी आसपास की खिचड़ी को चाटे बिना एकदम बीच में ही हाथ डाल दिया।" वृद्धा की बात सुनकर चाणक्य की बुद्धि ठिकाने आ गई। उसने सोचा वृद्धा का कथन ठीक है। इसके कहे अनुसार करने पर ही सफलता मिल सकती है। बालक से भी यदि

कोई हितकारी वचन मिल सके तो उसे अवश्य ग्रहण करना चाहिये। नीति-शास्त्र भी यही उपदेश देता है। अतएव नन्दराजा का राज्य हस्तगत करने के लिए उसने उस वृद्धा का उपदेश ग्रहणकर पुनः प्रयत्न करने का निश्चय किया।

धीरे-धीरे चाणक्य ने फिर सेना एकत्र करना आरम्भ किया; और चन्द्रगुप्त को उसका अधीश्वर बनाया। इसके बाद किसी बड़े राज्य से सहायता लेने के विचार से वह हिमवत् कूट-हिमालय पर्वत की ओर गया। वहाँ भीलों का नायक पर्वतक नाम का राजा था। उससे चाणक्य ने मित्रता की। इसके बाद एक दिन चाणक्य ने पर्वत को अपना उद्देश्य कह सुनाया, और उससे कहा कि :—"यदि आप पूर्णरूप से सहायता करें, तो नन्द का राज्य जड़मूल से उखाड़ कर हम दोनों उसकी विपुल सम्पत्ति को बाँट ले सकते हैं!"

पर्वतक ने चाणक्य की बात स्वीकार करली और थोड़े ही दिनों बाद वह अपनी विशाल एवं सुसज्जित सेना लेकर चाणक्य के साथ चल दिया। निश्चित स्थान पर चन्द्रगुप्त भी अपनी सेना सहित उससे आ मिला। इस प्रकार बहुत बड़ी सेना के साथ चाणक्य, चन्द्रगुप्त और पर्वतक नन्दराजा के प्रदेश में जा पहुंचे। आसपास का प्रदेश हथियाकर उन्होंने नन्दराजा के एक बहुत बड़े नगर के अगल-बगल में घेरा डाला, किन्तु उस नगर पर अधिकार नहीं हो सका। अतएव चाणक्य परिव्राजक का वेश धारण कर उसका कारण जानने के लिए नगर में प्रविष्ट हुआ। चारों ओर भटकने के बाद उसने एक स्थान पर भली भाँति प्रतिष्ठित की हुई देवियों की मूर्तियाँ देखीं। देखकर उसने सोचा कि, यथार्थ में इन मूर्तियों के प्रभाव से ही इस नगर पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकी है। अतएव वह उन मूर्तियों के उत्थापन का उपाय सोचने लगा।"

इधर कई दिनों के घेरे से नगर के लोग भी उकता गये थे। इसलिए उन त्रस्त लोगों ने इस परिव्राजक से पूछा :—"हे भगवन्! क्या आप बतला सकते हैं कि इस नगर पर से यह सङ्कट कब दूर होगा?"

चाणक्य को अनायास मौका मिल गया। उसने प्रसन्नता पूर्वक कहा :— "यदि आपलोग इस नगर को संकट से मुक्त करना चाहते हैं तो इन देवियों की मूर्तियाँ यहाँ से हटाइये। जब-तक ये देवियाँ यहाँ बैठी हुई हैं, तब-तक आपके नगर का संकट दूर नहीं हो सकता।"

फलतः चाणक्य के वचन सुनते ही नागरिकों ने मूर्तियों को उखाड़ना आरम्भ कर दिया। उधर चाणक्य के संकेत पर चन्द्रगुप्त और पर्वतक भी थोड़े-थोड़े पीछे हटते चले गये। इससे प्रसन्न होकर नागरिकों ने देवियों की मूर्तियाँ उखाड़ कर वहाँ गड्ढा कर दिया।

इसके थोड़े ही देर बाद चन्द्रगुप्त और पर्वतक ने [illegible]री पर चढ़ाई करके अपना अधिकार जमा लिया। तत्पश्चात् उस नगर को नष्ट कर शेष रहे हुए प्रदेश पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार एक बहुत बड़ी सेना लेकर उन दोनों राजाओं ने, यानी चन्द्रगुप्त और पर्वतक ने चाणक्य को आगे रख पाटलीपुत्र को घेर लिया। तब अभिमान से अन्धा बना हुआ नन्दराजा भी अपनी सेना को साथ लेकर लड़ने के लिए आया; किन्तु उसका पुण्य क्षय हो जाने से युद्ध में पराजित होकर सम्पूर्ण सेना नष्ट-भ्रष्ट हो गई। इस प्रकार निर्बल हो जाने पर नन्दराजा पकड़ा गया। तब उसने चाणक्य से दया याचना करके जीवन दान माँगा। उस समय चाणक्य ने उससे कहा : "हे नन्द ! तूने तो मुझे गर्दन पकड़ कर सभा में से बाहर निकाल दिया था; किन्तु मैं तो तुझे जीवन-दान दे रहा हूं। इसलिए प्रसन्न होकर एक रथ में तू अपनी इच्छानुसार जितना भी द्रव्य चाहे, वह ले जा और जहाँ जो चाहे, तू जा सकता है। तुझे मार्ग में कोई भी रोक-टोक या उपद्रव नहीं करेगा।"

चाणक्य के इन मर्म भेदी वचनों को सुनकर बिजली के समान चंचल राज्य-लक्ष्मी को धिक्कारते हुए, नन्दराजा ने अपनी दोनों रानियों एवं एक पुत्र को साथ लेकर उत्तमोत्तम रत्नों से परिपूर्ण रथ तैयार किया और एक विषकन्या को शत्रु से बदला चुकाने के लिए राजभवन में छोड़कर शेष सभी सार वस्तुओं सहित वह चल दिया; किन्तु जिस समय नन्दराजा का रथ जा रहा था; उसी समय उसकी प्रिय पुत्री चन्द्रगुप्त को देखकर मुग्ध हो गई। वह आतुर नेत्रों से उसकी ओर देखने लगी। अतः नन्दराज ने उसे रथ पर से उतार कर चन्द्रगुप्त के पास भेज दिया और वह वहाँ से चला गया।

किन्तु नन्दपुत्री पिता के रथ से उतर कर जैसे ही चन्द्रगुप्त के रथ पर चढ़ने लगी उसी समय चन्द्रगुप्त के पहिये के नौ आरे टूट गये। इसे अपशकुन समझकर चन्द्रगुप्त राजकन्या को रोकने लगा; किन्तु उसी समय चाणक्य ने कहा :—"वत्स ! यह तो शुभ शकुन है। इसे रोकना ठीक नहीं।"

चन्द्रगुप्त ने आश्चर्यपूर्वक पूछा : "इसे शुभ शकुन कैसे समझा जाय !"

तब चाणक्य ने कहा कि "तुझसे लेकर नौ पीढ़ी तक तेरा राज्य शत्रु रहित एवं निष्कण्टक चलता रहेगा" अतएव नन्दपुत्री को रथ में बैठाकर चन्द्रगुप्त ने नगर में प्रवेश किया।

चन्द्रगुप्त और पर्वतक दोनों नन्दराजा के महल में पहुंचे। दैवयोग से वहाँ जाते ही पर्वतक नन्दराजा की विषकन्या को देखकर मुग्ध हो गया; किन्तु उसके स्पर्श मात्र से जहर चढ़ने के कारण पर्वतक की मृत्यु हो गई और उसका राज्य भी चन्द्रगुप्त के हाथ में आ गया। इस प्रकार चन्द्रगुप्त एक बड़े

राज्य का स्वामी बन गया। शुभ मुहूर्त में चाणक्य ने चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक किया और अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण हो जाने से उसने अपनी खुली हुई शिखा फिर से बाँधी। वीर निर्वाण के बाद १५५ वर्ष व्यतीत होने पर चन्द्रगुप्त मगध का सम्राट् और चतुर चाणक्य उसका महामन्त्री बना।

इस प्रकार मयूर पोषकों के नायक की मुरा नाम की पुत्री से उत्पन्न होने के कारण चन्द्रगुप्त का वंश मौर्यवंश कहलाया। इसके बाद चाणक्य ने राज्य प्रबन्ध की ओर ध्यान दिया। उधर नन्दराजा के कई अनुभवी पुरुष विषम प्रदेश में रह कर राज्य में चोरी करके चन्द्रगुप्त को त्रस्त करने लगे। अतएव नगर की रक्षा के लिए सब प्रकार समर्थ ऐसे कोलिक नाम के एक कूट बुद्धि को उसने 'कोतवाल' बनाया; उसने धीरे-धीरे मेल-जोल बढ़ाकर भोजनादि के सत्कार के बहाने चोर बने हुए नन्दराजा के मनुष्यों को कोतवाल ने मार डाला। इस प्रकार चाणक्य की बुद्धिमानी से चन्द्रगुप्त का राज्य पूर्ण तथा निष्कण्टक हो गया।

इसके बाद चाणक्य ने अपनी स्त्री एवं पारिवारिक जनों को पाटलीपुत्र बुलाकर सब प्रकार से सुखपूर्वक रखा। चाणक्य की स्त्री अपने पति का राजा के समान वैभव देखकर प्रसन्न हुई।

पहले एक बार गरीबी की दशा में चाणक्य के श्वसुर ने उसकी स्त्री का अपमान किया था। उसी ने अब चाणक्य को राजा का महामन्त्री बना देखकर उससे अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना की। उसने कहा :—"हे जामाता! पहले मैंने अपने पुत्र के विवाह के समय तुम्हारी स्त्री (मेरी पुत्री) को एक निर्धन स्त्री कह कर उसका जरा भी सम्मान नहीं किया था। इसलिए आप हमारे उस अपराध को कृपा-करके अब क्षमा कर दीजिये।" अपने श्वसुर के इस प्रकार पश्चात्तापपूर्वक विचार सुनकर वह प्रसन्न हो गया। महान् पुरुष नम्रता प्रकट करने वालों पर हमेशा प्रसन्न ही होते हैं। अतएव समय को पहचानने वाले चाणक्य ने अपने श्वसुर एवं अन्य स्वजनों को उनकी योग्यतानुसार ग्रामादि देकर सुखी सन्तुष्ट किया। भला, जगत में उदय होने वाले सूर्य को कौन नमस्कार नहीं करता?

चन्द्रगुप्त का राज्यभण्डार खाली देखकर चाणक्य ने युक्ति-प्रयुक्ति से उसे भर दिया।

उधर चन्द्रगुप्त राज्य शासन में प्रवृत्त हुआ। साथ ही मिथ्यात्वी ब्राह्मणों के शास्त्रादि सुनकर उनमें उसका अनुराग हो चला। अतएव इस बात को जानकर चाणक्य ने एकदिन एकान्त में उससे कहा :—"वत्स! तुम्हें ऐसे धर्म का पालन करना चाहिए, जिससे पाप में डूबी हुई आत्मा भी भवसागर

से पार होने के लिए समर्थ बन सके ! बाकी तो पाखण्डी लोगों और धूर्त व्यक्तियों ने अपनी आजीविका चलाने के लिए ही अनेक प्रपञ्च रच दिये हैं; अतएव तुम्हें उनसे सदैव दूर ही रहना चाहिए।"

तब चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से पूछा कि "आप मुझे किस धर्म की आराधना के लिए कहते हैं ?"

"मैं तो जैनधर्म का अनन्य भक्त हूं। अन्य सभी धर्मवालों की अपेक्षा मुझे तो इस धर्म में कुछ अधिक महत्त्व प्रतीत होता है। साथ ही मेरी कुल-परम्परा में भी यह जैनधर्म ही चला आ रहा है।"

"मेरा मन भी इस प्रकार के अच्छे धर्म का पालन करने के लिए आतुर हो रहा है; किन्तु किसी प्रकार से थोड़ी परीक्षा कर लेने के बाद ही इस पर विश्वास करना ठीक होगा।"

"तुम्हारा कथन ठीक है, क्योंकि अज्ञानरूप अन्धकार में फँसे हुए कितने ही गुरु अनजान मल्लाह की तरह स्वयं भी डूबते हैं और अपने भक्तों को संसार सागर में डूबा देते हैं।"

"हे पूज्य ! आपका कथन सत्य हो सकता है : किन्तु उनलोगों का ऐसा दुराचार युक्त आचरण आपने कभी प्रत्यक्ष भी देखा है, या केवल सुनी हुई बातों पर से ऐसा कहते हैं ?"

"उनके दुराचरण को मैं अच्छी तरह जानता हूं; किन्तु तुम्हें मैं वह प्रत्यक्ष भी दिखलाऊँगा।"

इसके बाद एक दिन चाणक्य महामन्त्री ने प्रत्येक पाखण्डी धर्मवालों को अपने-अपने धर्म का परिचय देने के लिए बुलवाया; और उन सबको राजा के अन्त:पुर के निकट एकान्त में बैठा दिया। साथ ही अन्तःपुर के आसपास बुद्धिमान चाणक्य ने पहले ही बारीक चूना बिछवा दिया था। अत: वे पाखण्डी एवं लम्पट धर्मध्वजी, जब-तक चन्द्रगुप्त नहीं आया, तब-तक उठकर खिड़कियों की जालियों एवं झरोखे में से अन्त:पुर की स्त्रियों को ही ताकते रहे। राजा के आने पर वे सब बगुले की तरह सरल मुद्रा बनाकर चुप-चाप बैठ गये और अपने-अपने धर्म का स्वरूप वर्णन करके वापस चले गये।

महान् बुद्धिशाली चाणक्य ने राजा को उस चूने की धूल पर बने हुए पद चिह्न बताकर कहा कि—"वत्स ! ये देखो, उन लोगों के चिह्न ! जबतक तुम यहाँ नहीं आये थे, तब तक लम्पट धर्मध्वजी तुम्हारे अन्त:पुर की नारियों को ही ताकते रहे। फलतः चन्द्रगुप्त उनलोगों की यह दुराचारवृत्ति देखकर एकदम उनसे विरक्त हो गया।

संकलन

विश्व के समस्त जीवों में मनुष्य ही उत्सव प्रिय प्राणी है। जहाँ एक ओर जीवन में उत्सव व त्योहार उमंग, उल्लास व उत्साह के प्रतीक होते हैं वही दूसरी ओर उत्सवों की आध्यात्मिक महत्ता भी रहती है। पर्युषण श्रमण संस्कृति का एक ऐसा ही महत्वपूर्ण लोकोत्तर पर्व है जो मानव को लौकिक परिधियों से ऊपर उठा कर आध्यात्मिकता के उच्च शिखर तक ले जाता है इसीलिए पर्युषण पर्व को लोकोत्तर पर्वों में श्रेष्ठ माना जाता है पर्युषण का अर्थ है आत्मा के समीप रहना अपनी अन्तरआत्मा में झांकना, आत्मा से कषाय रूपी कचरे कों साफ करना और आत्मा को मलिनता से शुद्धता की ओर ले जाना। आत्मा के ऊपर पांच प्रकार के आश्रव हाते हैं प्रथम प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद्, तीसरा अदत्तादान, चौथा ब्रह्मचर्य तथा पाँचवा परिग्रह। मन, वचन और काया द्वारा इन आश्रव रूपी आवरणों से आत्मा को शुद्ध करना तथा कषायों का परित्याग कर आत्म साधना में लीन होना ही पर्युषण शब्द की सार्थक व्याख्या होगी। सरल भाषा में सम्यक् प्रकार से आत्म आराधना ही पर्युषण कहलाती है जिसमें तपश्चर्या, प्रतिक्रमण, भावना शुद्धि और क्षमा याचना आदि आवश्यक विधियों का समावेश आत्मा में सर्वथा निवास करने की प्रेरणा देता है।

(अर्हत संघाचार्य श्री सुशील मुनिजी की शिष्या साध्वी दीप्ति जी महाराज के द्वारा जैन भवन, कलकत्ता में पर्युषण पर्व पर दिये गये प्रवचन से साभार)

CREATIVE LIMITED

12, Dargah Road, Post Box 16127 Cal-700 017
Phone : (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 2400098, 2471833

SURANA MOTORS PVT. LTD.

24A, Shakespeare Sarani, 84, Parijat, 8th floor
Calcutta-700071 Phone : 2477450/5264

M/s. J. KUTHARI PVT. LTD.

12, India Exchange Place, Calcutta-1
Phone : 220-3142, Resi. 475-0995

PARK PLACE HOTEL

SINGHI VILLA, 49/2, Gariahat Road,
Calcutta-700019 Phone : 475-9991/9992/7632

M/s. METROPOLITAN BOOK COMPANY

93, Park Street, Calcutta-700016
Phone : 292418 Resi. 464-2783

M/s. D. SANDEEP & CO.

78, J. S. S. Road, Ratna Deep,
Opera House, Mumbai

BOYD SMITHS PVT. LTD.

8, Netaji Subhas Road, B-3/5, Gillander House
Calcutta-700001
Ph. : (O) 220-8105/2139 (R) 244-0629/0319

NAHAR

5/1, A. J. C. Bose Road, Calcutta-700 020
Phone : 2476874 Resi 2443810

P. C. JAIN

B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur-208005
Phone : 29-5552/5955

ARBEITS INDIA

8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta-700071 Ph : 296256/8730/1029
Resi. : 2476526/6638/2405126
Telex : 0212333 ARBI IN Fax : 0091-33290 174

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta-700001
Phone : 25-7927/6734/3816 Resi. : 400440

HARAKH CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi-110 049
Phone : 6461075

RAJIV LALWANI
12, Duff Street, Calcutta
Phone : 2556705

G. M. SINGHVI
M/s. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta-700 001
Phone : 248-7476-8 (O) 475-4851/1483 (R)
Fax : 248-8184

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road, Calcutta-20
Phone : Resi. 455-3586

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta-700017
Phone : 242-5234/0329

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta-700071
Phone : 2428181

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta-1
Phone : 242-3870 Office Fax : 242-8621

ABHAY CHAND BOTHRA
Phone : Resi. 298-4729/298755

C. H. Spinning & Weaving Mills Pvt. Ltd.
Bothra Ka Chowk
Gangasahar, Bikaner

APRAJITA BOYD

9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia, Howrah-711106
Phone : 6653666, 6652272

B. W. M. INTERNATIONAL

Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Phone : Office 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Phone : 0151-522404, 25973
Fax : 05414-25378 (U.P.) 0151-61256 (Bikaner)

SUDEEP KUMAR SINGH DUDHORIA

Phone : Off. 252565/6315 Resi. : 4753133

A-D. ELECTRO STEEL CO. (PVT.) LTD.

Mfrs of Carbon Steel, Cast Steel, M. V. Steel &
all sort Alloy Steel Casting as per specification
Baltikuri (Surkhimill) Kalitala, Howrah
Office : 2203889/0714 Works : 6670485/2164
Resi. : 471-8393 Fax : 91-33-6672164

UJJWAL TRADING PVT. LTD.

Regd. Office : 11, Clive Row,
3rd Floor, Room No. 14, Calcutta-700001
Phone : Off. 242-4131/4756

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION

47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd floor,
Calcutta-700 007 India
Phone : 91-33-230 1329, 2321033
Fax : 91-33-230 2413

SMT. KUSUM KUMARI DUGAR

166, Jodhpur Park, Calcutta-700068
Phone : 4720610

VIJAY KUMAR BHANDAWAT

20/1, Maharshi Devendra Road
5th Floor, Calcutta-7
Phone : 239-6823, 25-0623

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञानमंदि[illegible]
[illegible] जैन आराधना केन्द्र, [illegible]

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowringhee Road, Calcutta-700 016
Phone : 2264943, 292194 Fax : (033) 2457390

KUSUM CHANACHUR
Prop. **CHURORIA BROTHERS**
Mfg. by—K. E. C. Food Product
P. O. Azimganj, Dist. Murshidabad
Phone : STD 03483-53234
Cal—230-0432, 231-2802

ARIHANT ELECTRIC CO.
Manufacturer of Electric Cables
21, Rabindra Sarani, Calcutta-700007
Phone : 255668

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta-700 001, India
Phone (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI Fax : (033) 220975
Resi. : 464-3235/1541 Fax : (033) 4640547

NIRMALA BOTHRA
7/1/A, Nafar Kundu Road, Calcutta-700026
Phone : 475-5503

REENA MAHENDRA BHANDARI
13, Sahakar, 'B' Road, Church Gate, Bombay-20
Phone : 285-4970 Resi.
285-3762/65, 204-1792 Office

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS P LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta-700073 Tel. (033) 262210

जैन भवन प्रकाशन

हिन्दी

१.	अतिमुक्त (२य संस्करण)—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	४०.००
२.	श्रमण संस्कृति की कविता—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	२०.००
३.	नीलांजना—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	३०.००
४.	चन्दन मूर्ति—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	५०.००
५.	वर्द्धमान महावीर—श्री गणेश ललवानी	६०.००
६.	पंचदशी—श्री गणेश ललवानी	१००.००
७.	यादों के आईने में—श्रीमती राजकुमारी बेगानी	३०.००
८.	बरसात की एक रात—श्री गणेश ललवानी	४५.००

বাংলা

১.	অতিমুক্ত	—শ্রীগণেশ লালওয়ানী	৪০.০০
২.	শ্রমণ সংস্কৃতির কবিতা	—শ্রীগণেশ লালওয়ানী	২০.০০
৩.	ভগবান মহাবীর ও জৈন ধর্ম	—শ্রীপূরণচাঁদ শ্যামসুখা	১৫.০০

English

1.	Bhagavati Sutra (Text with English Translation) —Sri K. C. Lalwani	
	Vol. I (Satak 1-2)	150.00
	Vol. II (Satak 3-6)	150.00
	Vol. III (Satak 7-8)	150.00
	Vol. IV (Satak 9-11)	150.00
2.	The Temples of Satrunjaya —James Burgess	100.00
3.	Essence of Jainism—Sri P. C. Samsukha tr. by Sri Ganesh Lalwani	10.00
4.	Thus Sayeth our Lord—Sri Ganesh Lalwani	10.00

पर्युषण पर्वपर आपके प्रिय जनों के लिए एक शानदार उपहार !

दुनिया में पहली बार

णमोकार मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ

शेट्रा

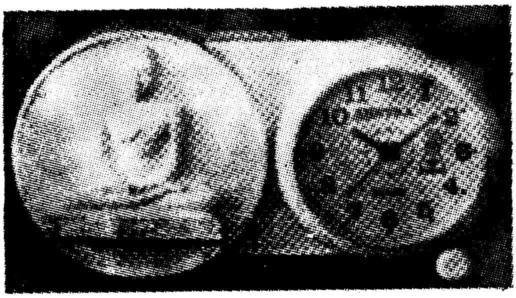

विशेषताएँ : १) आकर्षक एक्सपोर्ट मॉडेल। २) श्लोक या मंत्र की आवाज अत्यंत सुमधुर और स्पष्ट है। ३) अलार्म होते ही श्लोक या मंत्र का उच्चारण लगातार ४५ मिनट होगा। ४) यदि आप बीच में ही बंद करना चाहते है तो कर सकते है। ५) सफेद और सँडबिच यह दो आकर्षक रंगो में उपलब्द है। ६) यह घडी तीन पेन्सिल बॅटरी सेल पर चलती है। ७) उच्चतम तकनीक के कारण सतत उपयोग से भी इसकी सुमधुर ध्वनी अनेक बरसोंतक जैसे के वैसे ही रहेगी। ८) हर पूर्जे की खराबी के लिए एक वर्ष की गारंटी दी गई है। ९) इस घडी की कल्पना दुनिया में सबसे पहली बार साकार की है।

निर्माता - **शेट्रा टाईम्स (प्रा.) लिमिटेड**, दादर (पूर्व) मुंबई - ४०० ०१४

फोन ४१५६००१, ४१५६००२, ४१४५७८७ फॅक्स : ०२२ - ४१५६१५४, ४१४०९१४

वितरक : ● एशियन मार्केटिंग, मुंबई - ३ फोन : (०२२) ३४१४९४६ ● ताडदेव एम्पोरियम, मुंबई - ७, फोन : (०२२) ३०९९३६१ ● गांधी वॉच कंपनी, पुणे - २, फोन : (०२१२) ४५८८४९ ● पद्मावती सेल्स कार्पोरेशन अहमदाबाद - १, फोन : (०७९) २११ १२५३ ● मोरबी क्लॉक कंपनी, सूरत - ३, फोन : (०२६१) ४२६६१५ ● ईस्टर्न टाईम एजन्सीज, कलकत्ता-१, फोन : (०३३) २२५४५१५, २२५४८९० ● वॉच ॲन्ड क्लॉक एजन्सीज, चेन्नई - १, फोन : (०४४) ५८१६२९, ५८३७१९ ● टाईम पॉईंट, दिल्ली - ३४, फोन : (०११) ७२२९५००१ ७२१९५०१ ● हितेश क्लॉक एजन्सीज, बंगलोर - ५३, फोन : (०८०) २२५७१६६ ● बॉम्बे वॉच कंपनी, इंदौर-७, फोन : (०७३१) ४३००३५, ५६४२६३ ● शंकर वॉच ॲन्ड रेडिओ हाऊस, भोपाल-१, फोन : (०७५५) ५४२७८३ ● नागपूरवाला वॉच कं. वर्धा - १, फोन : (०७१५२) ४०१०७

(महावीर या गोमटेशजी के अलावा श्लोक और मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ गणेश, राम-सीता, श्रीकृष्ण, शिव, साई, गुरुनानक, मंगलमूर्ति गणेश, आयप्पा, मुरगा, गुरुवायुराप्पा, कालीमाता, दुर्गामाता, बालाजी, राघवेंद्र, स्वामी नारायण, अजान और चर्च प्रेअर (जीझस् क्राइस्ट) की भी उपलब्ध हैं।)

[illegible]

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है।
ज्ञान के बिना चारित्र के गुण नहीं होते, गुणों के बिना मुक्ति नहीं होती
और मुक्ति बिना निर्वाण शाश्वत आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, [illegible]
[illegible]

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD.

Steams Agents, Handling Agents, Commission Agents
& Transport Contractors

Regd. Office :
2, CLIVE GHAT, STREET,
(N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6
CALCUTTA-700 001
Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333
Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office : 28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam-530020
Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326
Gram : BOTHRA

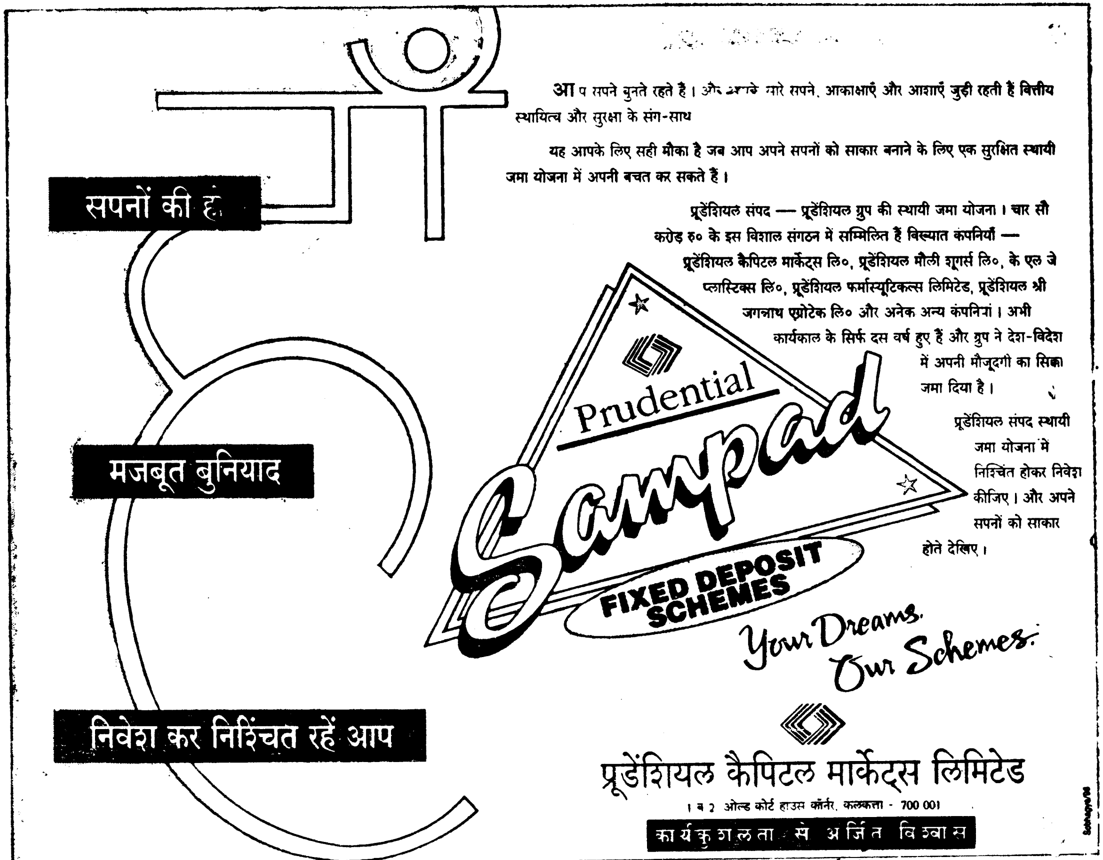
सपनों की ह
मजबूत बुनियाद
निवेश कर निश्चिंत रहें आप
आप सपने बुनते रहते हैं। और आपके सारे सपने, आकांक्षाएं और आशाएं जुड़ी रहती हैं वित्तीय स्थायित्व और सुरक्षा के संग-साथ
यह आपके लिए सही मौका है जब आप अपने सपनों को साकार बनाने के लिए एक सुरक्षित स्थायी जमा योजना में अपनी बचत कर सकते हैं।
प्रूडेंशियल संपद — प्रूडेंशियल ग्रुप की स्थायी जमा योजना। चार सौ करोड़ रु० के इस विशाल संगठन में सम्मिलित हैं विख्यात कंपनियाँ — प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लि०, प्रूडेंशियल मौली शूगर्स लि०, के एल जे प्लास्टिक्स लि०, प्रूडेंशियल फर्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, प्रूडेंशियल श्री जगन्नाथ एग्रोटेक लि० और अनेक अन्य कंपनियां। अभी कार्यकाल के सिर्फ दस वर्ष हुए हैं और ग्रुप ने देश-विदेश में अपनी मौजूदगी का सिक्का जमा दिया है।
प्रूडेंशियल संपद स्थायी जमा योजना में निश्चिंत होकर निवेश कीजिए। और अपने सपनों को साकार होते देखिए।
Prudential
Sampad
FIXED DEPOSIT SCHEMES
Your Dreams. Our Schemes.
प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड
1 ब 2 ओल्ड कोर्ट हाउस कॉर्नर, कलकत्ता - 700 001
कार्यकुशलता से अर्जित विश्वास

श्री कैलाससागर सूरि ज्ञानमंदिर
महावीर जैन आराधना केन्द्र

मानव की तृष्णा मेरु पर्वत समान है। मन की शुद्ध भावना से इन्सान अपने कर्म क्षय कर सकता है

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभ कामनाएँ

★
★ ★
★ ★ ★

G.C. Jain
A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel - 6445095/24011

WB/NC - 330

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

Vol. XXI No. 6 September 1997

जिसने दुःख को समाप्त कर दिया है उसे मोह नही है, जिसने मोह को मिटा दिया है उसे तृष्णा नहीं है। जिसने तृष्णा का नाश कर दिया है उसके पास कुछभी परिग्रह नहीं है, वह अकिंचन है।

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर उनका संदेश जन-जन तक पहुँचे इस शुभ कामना के साथ -

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666-7212/7225